2021

NILAMBER PITAMBER UNIVERSITY

GULABCHAND PRASAD AGRAWAL COLLEGE

UNIVERSITY UG DEPT OF GEOGRAPHY

HOME ASSIGNMENT

Bachelor of Arts

Semester – [redacted] & VI

Name	:	**YUGALKISHOR YADAV**
Father's Name	:	LAKHAN YADAV
College Roll No	:	707
Roll No	:	**18BA-0508977**
Registration No	:	**NPU/16920/18**
Subject	:	GEOGRAPHY
Session	:	2018-21
Mobile No	:	9065227651

Signature of Student

पर्यावरण

पर्यावरण की परिभाषा

इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। चाहे वे जमीन पर रहते हों या पानी पर, वे पर्यावरण का हिस्सा हैं। पर्यावरण में हवा, पानी, धूप, पौधे, जानवर आदि भी शामिल हैं।

इसके अलावा, पृथ्वी को ब्रह्मांड का एकमात्र ऐसा ग्रह माना जाता है जो जीवन का समर्थन करता है। पर्यावरण को एक कंबल के रूप में समझा जा सकता है जो ऋषि और ध्वनि ग्रह पर जीवन रखता है।

पर्यावरण वह है जो कि प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है हमारे चारों तरफ़ वह हमेशा व्याप्त होता है। सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों तथ्यों प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। इस प्रकार एक जीवधारी और उसके **पर्यावरण** के बीच अन्योन्याश्रय संबंध भी होता है।

पर्यावरण से क्या लाभ होता है?

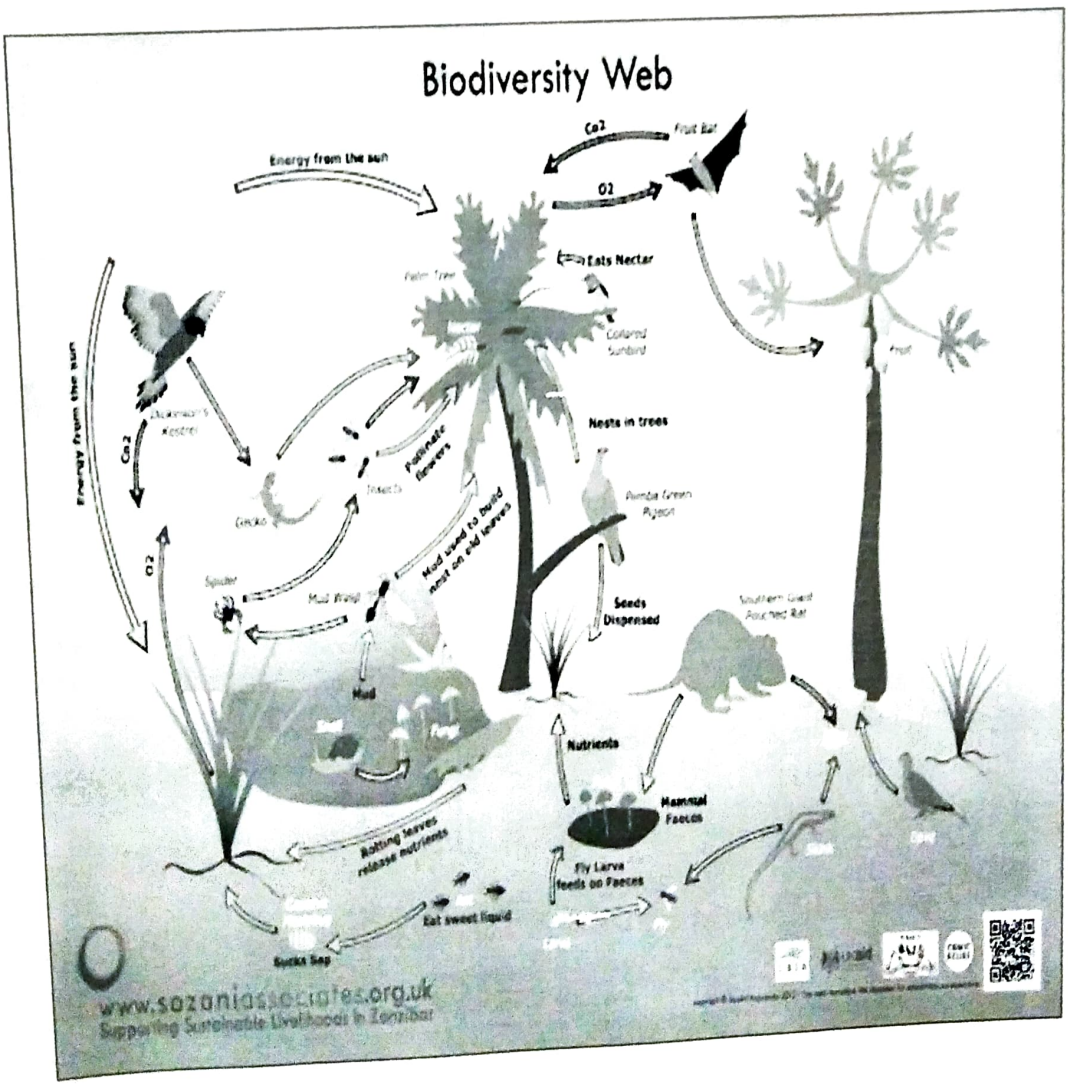

पर्यावरण से हमें स्वच्छ हवा मिलती है। पर्यावरण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। पर्यावरण में जैविक, अजैविक, प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वस्तु का समावेश होता है।

प्राकृतिक पर्यावरण में पेड़, झाड़ियां, नदी, जल, सूर्य प्रकाश, पशु, हवा आदि शामिल है।जो हवा हम हर पल सांस लेते हैं, पानी जिस के सिवा हम जी नहीं सकते और जो हम अपनी दिनचर्या में इस्तेमाल करते हैं, पेड़ पौधे उनका हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

यह सब प्राकृतिक चीजें हैं जो पृथ्वी पर जीवन संभव बनाती हैं। वह पर्यावरण के अंतर्गत ही आती हैं। पेड़-पौधों की हरियाली से मन का तनाव दूर होता है, और दिमाग को शांति मिलती है। पर्यावरण से ही हमारे अनेक प्रकार की बीमारी भी दूर होती है।

पर्यावरण मनुष्य, पशुओं और अन्य जीव चीजों को बढ़ाने और विकास होने में मदद करती है। मनुष्य भी पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण भाग है। पर्यावरण का एक घटक होने के कारण हमें भी पर्यावरण का एक संवर्धन करना चाहिए।

पर्यावरण पर हमारा यह जीवन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण की वास्तविकता को बनाए रखना होगा।

पर्यावरण से हानि

आज के युग में पर्यावरण प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पर्यावरण की प्रकृति नष्ट हो रही है। हर जगह जहां घने वृक्ष हैं उन्हें काट कर वहां बड़ी इमारत बनाए जा रहे हैं।

गाड़ी की धुआ, फैक्ट्री मे मशीनों की आवाज, खराब रासायनिक जल इन सब की वजह से, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण हो रहा है। यह एक चिंता का विषय बन चुका है यह अत्यंत घातक है। जिसके कारण हमें अनेक प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है और हमारा शरीर हमेशा बिगड़ रहा है।

वही आज जहां विज्ञान में तकनीकी और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा मिला है और दुनिया में खूब विकास हुआ है तो दूसरी तरफ यह बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के लिए भी जिम्मेदार है। आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकी करण और टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से पर्यावरण पर गलत प्रभाव पड़ रहा है।

मनुष्य अपने स्वार्थ के चलते पेड़ पौधों की कटाई कर रहा है एवं प्राकृतिक संसाधनों से खिलवाड़ कर रहा है, जिसके चलते पर्यावरण को काफी क्षति पहुंच रही है, यही नहीं कुछ मानव निर्मित कारणों की वजह से वायुमंडल, जलमंडल आदि प्रभावित हो रहे हैं धरती का तापमान बढ़ रहा है और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो रही है, जो कि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी खतरनाक है।

पर्यावरण हमारे लिए अनमोल रत्न है। इस पर्यावरण के लिए हम सभी को जागरूक होने की आवश्यकता है। पर्यावरण का सौंदर्य बढ़ाने के लिए हमें साफ-सफाई का भी बहुत ध्यान रखना चाहिए।

पेड़ों का महत्व समझ कर हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाना चाहिए। घने वृक्ष वातावरण को शुद्ध रखते हैं और हमें छाया प्रदान करते हैं। घने वृक्ष पशु पक्षी का भी निवास स्थान है। इसीलिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए।

पर्यावरण किसे कहते हैं

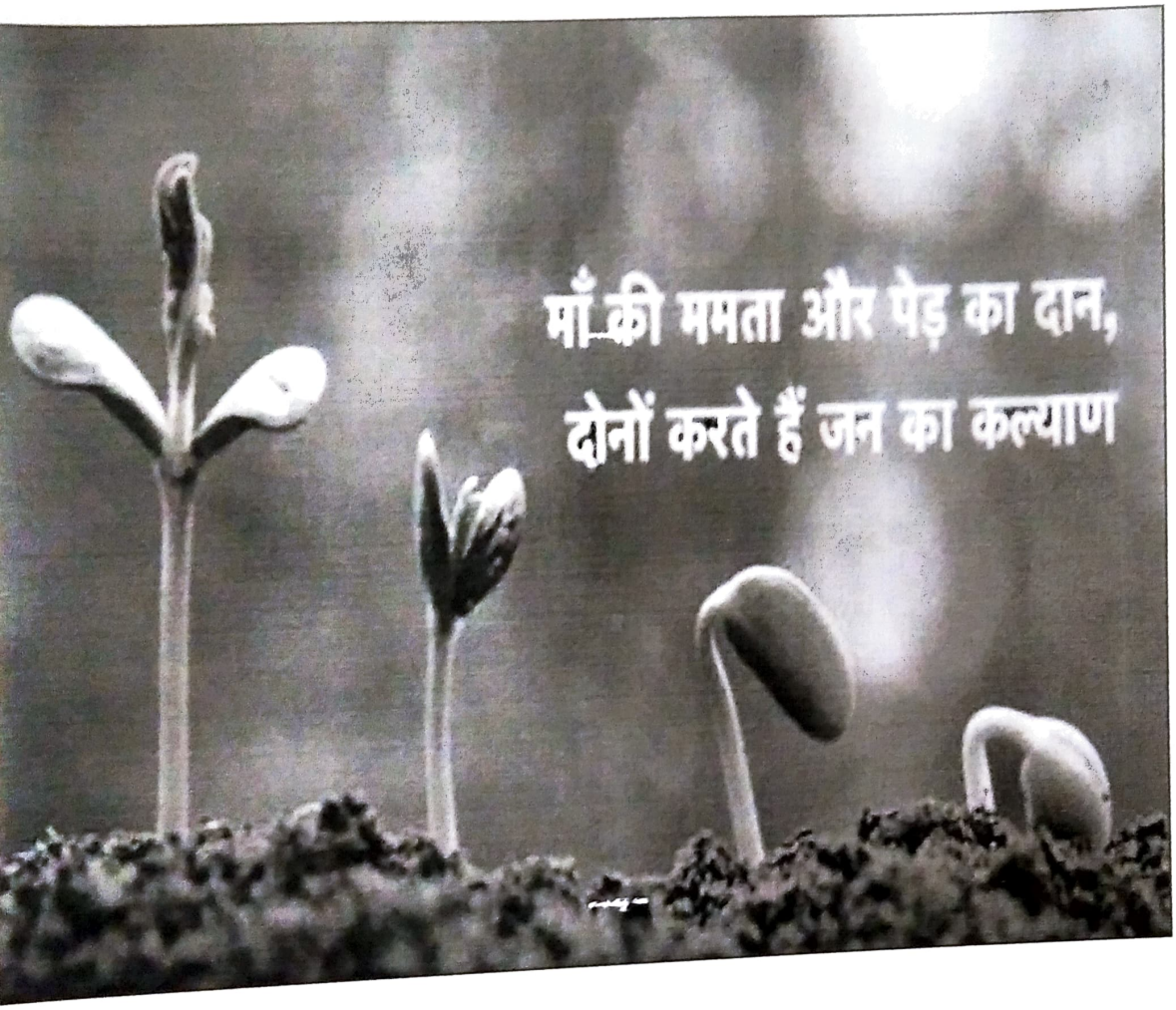

पर्यावरण हमें अनगिनत लाभ देता है जिसे हम जीवन भर चुका नहीं सकते। चूंकि वे जंगल, पेड़, जानवर, पानी और हवा से जुड़े हुए हैं। जंगल और पेड़ हवा को फिल्टर करते हैं और हानिकारक गैसों को अवशोषित करते हैं। पौधे पानी को शुद्ध करते हैं, बाढ़ की संभावना को कम करते हैं, प्राकृतिक संतुलन बनाए रखते हैं और कई अन्य।

हम वास्तव में पर्यावरण के वास्तविक मूल्य को नहीं समझ सकते हैं। लेकिन हम इसके कुछ महत्व का अनुमान लगा सकते हैं जो हमें इसके महत्व को समझने में मदद कर सकते हैं। यह पर्यावरण में जीवित चीजों को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इसी तरह, यह पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है जो पृथ्वी पर जीवन की जांच करेगा। यह भोजन, आश्रय, वायु प्रदान करता है और मानव की सभी जरूरतों को पूरा करता है चाहे वह बड़ा हो या छोटा।

इसके अलावा, मनुष्यों का संपूर्ण जीवन समर्थन पूरी तरह से पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करता है। इसके अलावा, यह पृथ्वी पर विभिन्न जीवन चक्रों को बनाए रखने में भी मदद करता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा पर्यावरण प्राकृतिक सुंदरता का स्रोत है और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

पर्यावरण का हमारे जीवन में बहुत महत्व है, पर्यावरण के द्वारा ही पृथ्वी पर जीवन संभव है यदि आज हम जीवित हैं तो उसमे बहुत बड़ा हाथ पर्यावरण का है एक अच्छा और स्वच्छ पर्यावरण हमें बेहतर जीवन जीने में मदद करता है।

आप जानते होंगे की जब हम सांस लेते हैं तो ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं और जब हम सांस छोड़ते हैं तो उसके साथ कार्बन-डाई-ऑक्साइड छोड़ते हैं।

लेकिन क्या आपने कभी सोचा है जो हम ऑक्सीजन लेते हैं वो हमें कहाँ से मिलता है, ये ऑक्सीजन हमें पेड़-पौधों से मिलता है और ये सभी पेड़-पौधे हमारे पर्यावरण का हिस्सा हैं।

पर्यावरण पृथ्वी का एक अभिन्न अंग है, प्राचीन काल में मानव अपने चारों ओर के वातावरण को काफी स्वच्छ और सहेज कर रखता था, वह अपना ज्यादातर समय वातावरण को स्वच्छ रखने में ही देता था।

स्वस्थ जीवन और ग्रह पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व में पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पृथ्वी विभिन्न जीवित प्रजातियों का घर है और हम सभी भोजन, हवा, पानी और अन्य जरूरतों के लिए पर्यावरण पर निर्भर

हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने पर्यावरण को बचाना और उसकी रक्षा करना महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण क्षरण का कारण

मानवीय गतिविधियाँ पर्यावरण के क्षरण का प्रमुख कारण हैं क्योंकि अधिकांश गतिविधियाँ मनुष्य किसी न किसी तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। पर्यावरण के क्षरण का कारण बनने वाले मनुष्यों की गतिविधियाँ प्रदूषण, दोषपूर्ण पर्यावरण नीतियां, रसायन, ग्रीनहाउस गैसें, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन रिक्तीकरण आदि हैं।

ये सभी पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से भविष्य में ऐसी स्थिति पैदा होगी कि उपभोग के लिए संसाधन नहीं होंगे। और जीवित हवा की सबसे बुनियादी आवश्यकता इतनी प्रदूषित हो जाएगी कि मनुष्य को सांस लेने के लिए बोतलबंद ऑक्सीजन का उपयोग करना होगा।

इन सबसे ऊपर, बढ़ती मानव गतिविधि पृथ्वी की सतह पर अधिक दबाव डाल रही है जो अप्राकृतिक रूप में कई आपदाएं पैदा कर रही है। साथ ही, हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस गति से कर रहे हैं कि कुछ ही वर्षों में वे पृथ्वी से गायब हो जाएंगे।

अंत में, हम कह सकते हैं कि यह पर्यावरण ही है जो हमें जीवित रख रहा है। पर्यावरण के आवरण के बिना, हम जीवित नहीं रह पाएंगे।

इसके अलावा, जीवन में पर्यावरण के योगदान को चुकाया नहीं जा सकता है। इसके अलावा, फिर भी पर्यावरण ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसके बदले में हमने उसे केवल क्षतिग्रस्त और नीचा दिखाया है।

पर्यावरण का हमारे जीवन में क्या महत्व है

विभिन्न प्रकार की मानवीय गतिविधियाँ हैं जो सीधे पर्यावरणीय आपदाओं के लिए जिम्मेदार हैं, जिनमें शामिल हैं- अम्ल वर्षा, महासागरों का अम्लीकरण, जलवायु में परिवर्तन, वनों की कटाई, ओजोन परत का ह्रास, खतरनाक कचरे का निपटान, ग्लोबल वार्मिंग, अधिक जनसंख्या, प्रदूषण , आदि। पृथ्वी ग्रह पर जीवन के अस्तित्व में पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्यावरण शब्द फ्रांसीसी शब्द "एनवायरन" से लिया गया है जिसका अर्थ है "आसपास"। एक पारिस्थितिकी तंत्र पर्यावरण में मौजूद सभी जीवित और निर्जीव चीजों को संदर्भित करता है और यह जीवमंडल की नींव है, जो पूरे ग्रह पृथ्वी के स्वास्थ्य को निर्धारित करता है।

पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान जीवन विज्ञान की शाखाएं हैं, जो मुख्य रूप से जीवों के अध्ययन और जीवों और उनके पर्यावरण के बीच उनकी बातचीत से संबंधित हैं।

सुंदर प्रकृति को सहेज कर रखता था ,मनुष्य का **जीवन** बहुत सीधा-साधा और सरल था **पर्यावरण** का **हमारे जीवन** में बहुत **महत्व** है। मनुष्य एक पल भी इसके बगैर नहीं रह सकता। ... जल ,थल, वायु, अग्नि, आकाश इन्हीं पांच तत्वो से ही मनुष्य का **जीवन** है,और **जीवन** समाप्त होने पर वह इन्हीं में विलीन हो जाता है। प्राचीन काल में मनुष्य अपने चारों ओर की

मानव जाति (होमो सेपिएंस) का उद्भव लगभग पच्चीस लाख वर्षों से भी अधिक समय पूर्व हुआ था। उनमें मस्तिष्क अत्यंत विकसित होने के कारण वे सोचने की क्षमता रखते थे और अपने निर्णयों का उपयोग करते थे। मानव ने दो पैरों पर सीधे खड़े होकर चलना शुरू किया जिसके कारण उनके हाथ अपने शारीरिक कार्य करने के लिये स्वतंत्र हो गये।

दूसरे जन्तुओं की तरह मनुष्य भी अपने जीवन के निर्वाह के लिये पूरी तरह से भोजन के लिये पर्यावरण पर निर्भर था। बुद्धिमान होने के कारण मनुष्य ने

पर्यावरणीय संसाधनों को न केवल भोजन के लिये बल्कि दूसरे कार्यों को करने के लिये भी खोजना शुरू किया। पिछली कुछ शताब्दियों में पर्यावरण का दोहन नाटकीय ढंग से इतना बढ़ गया है कि पर्यावरण के गम्भीर रूप से नष्ट होने तथा विघटित होने का खतरा बढ़ गया है। इस पाठ में आप प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और दोहन के बारे में जानने के साथ-साथ यह भी जानेंगे कि इनका अत्यधिक दोहन कैसे किया जा रहा है।

पर्यावरण में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता

आदिम मानव अपने जीवन निर्वाह के लिये पर्यावरण पर निर्भर था। मानव जब और अधिक सभ्य होता गया, तब अपने जीवन को आरामदायक बनाने के लिये पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग करता था और विभिन्न पर्यावरणीय खतरों से अपने को बचाने के लिये उनका विभिन्न प्रकार से उपयोग करता था।

क. भूमिः

विभिन्न जीव जिनमें मनुष्य भी शामिल है, पृथ्वी पर रहते हैं। पृथ्वी की सतह का लगभग 29% भाग भूमि है जिसमें पर्वत, चट्टानें, मरुस्थल,

दलदल, वन और घास के मैदान शामिल हैं। मनुष्य भूमि का उपयोग फसल उगाने के लिये करता है जिससे उसको भोजन प्राप्त होता है।

उनको भूमि की आवश्यकता रहने के लिये मकान बनाने, सड़कें, तथा पशुशाला बनाने के लिये भी पड़ती है। बढ़ती हुई जनसंख्या की जरूरतों को पूरी करने के लिये, शहरीकरण और औद्योगीकरण, बांध बनाने, फ्लाई ओवर, भूमिगत पारपथ और फैक्ट्रियों के निर्माण के लिये भी भूमि की जरूरत होती है। भूमि संसाधनों का तीव्र गति से ह्रास हो रहा है।

ख. <u>जलः</u>

प्राकृतिक जलस्रोत जिनमें महासागर और समुद्र तथा सतही जलस्रोत जैसे नदियाँ, झील, झरने और तालाब आदि आते हैं। पृथ्वी पर पाये जाने वाले अलवणीय जल का लगभग **80%** भाग ऊँचे अक्षांशों और पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ के रूप में जमा रहता है। केवल **20%** भाग ही द्रव अवस्था में उपलब्ध होता है। पृथ्वी पर जल का प्राथमिक स्रोत वर्षा है। सभी जीवधारियों के लिये पानी अत्यंत आवश्यक है। पानी की आवश्यकता-

- कृषि (खेतीबारी) फसलों की सिंचाई
- उद्योगों में

- इमारतों के निर्माण में
- मछली, झींगा, जलीय पौधों (ऐक्वाकल्चर) के संवर्धन और
- पीने, नहाने, धोने, सफाई, बागवानी, मिट्टी के बर्तन बनाने आदि के लिये आवश्यक होता है।

यद्यपि जल कभी खत्म न होने वाला प्राकृतिक संसाधन है फिर भी इसके अत्यधिक प्रयोग और पानी को व्यर्थ करना इसकी कमी की तरफ इशारा करता है।

ग. <u>ऊर्जा:</u>

ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत सौर विकिरण है। आदि मानव ईंधन तथा गोबर और जन्तुओं के अपशिष्टों का प्रयोग गर्माहट तथा खाना पकाने के लिये करता था। गुफाओं और अपनी झोपड़ी में रोशनी करने के लिये, बीज से निष्कासित तेल और मछलियों का उपयोग करते थे। ऊर्जा का दूसरा मुख्य जीवाश्मीय ईंधन के स्रोत का उदाहरण है कोयला। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि कोयला लाखों वर्ष पूर्व पायी जाने वाली वनस्पति से निर्मित हुआ है जो तलछटों में गिर गये थे और उसमें दब गये थे।

अत्यधिक दबाव के चलते और वर्षों तक प्रचण्ड गर्मी के कारण ये वृक्ष और अन्य वनस्पतिक अवसादों में दबकर कोयले के रूप में परिवर्तित हो गयी। कोयले का उपयोग खाना पकाने, इंजनों को चलाने, उद्योगों में काम आने

वाली भट्टियों और बिजली उत्पन्न करने में किया जाता है। कोयले का प्रयोग धातुओं और खनिजों के निष्कर्षण के लिये भी किया जाता है साथ ही तापीय ऊर्जा उत्पादन में भी करते हैं।

घ. पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस

भी जीवाश्मीय ईंधन है। पेट्रोलियम संभवतः जलीय जीवों जो पिछले भूवैज्ञानिक काल के दौरान पाये जाते हैं, से हुआ है। ठीक उसी तरह जैसे वनस्पतियों से कोयले का निर्माण हुआ था।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस पृथ्वी के अत्यंत भीतरी भाग से प्राप्त किये जाते हैं और ऊर्जा के ये संसाधन अनवीकरणीय हैं (अर्थात पुनःनिर्माण नहीं किया जा सकता है)। पेट्रोलियम उत्पादों का उपयोग वाहनों के चलाने, स्टीमर, हवाई जहाज और प्लास्टिक और उर्वरकों के बनाने में किया जाता है।

पेट्रोल और डीजल परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद हैं। आपने शायद सीएनजी (संपीड़ित प्राकृतिक गैस) के बारे में सुना होगा जिसे आजकल वाहनों को चलाने के लिये प्रयोग में लाया जा रहा है और इसे एक स्वच्छ ईंधन माना जा रहा है। प्राकृतिक गैस और डीजल का प्रयोग विद्युत उत्पादन में किया जाता है। एल-पी-जी- (द्रवीय पेट्रोलियम गैस) को सिलिंडरों या

पाइप लाइन के द्वारा लाया जाता है और खाना पकाने के ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

ड. खनिज अयस्क या खनिज:

खनिज अयस्क धातुओं के रासायनिक यौगिक होते हैं जैसे एल्युमिनियम, आयरन (लौह), कॉपर (तांबा), जिंक, मैग्नीज इत्यादि। ये सभी अयस्क पृथ्वी में एक संचित भंडार के रूप में पाये जाते हैं। एल्यूमिनियम का उपयोग बर्तन, वाहनों के विभिन्न भागों, हवाई जहाज और अंतरिक्ष यान बनाने में करते हैं।

आयरन और उसके सम्मिश्रण का उपयोग हथियार, भारी मशीनरी, रेल इंजन, रेल पटरियां और दूसरी अन्य वस्तुएँ बनायी जाती हैं। कॉपर का उपयोग औद्योगिक पात्र, इलेक्ट्रिक तार बनाने के साथ साथ इलेक्ट्रॉनिक और दूरसंचार उद्योग में भी किया जाता है। सम्मिश्र धातुएँ जैसे पीतल और कांसे में भी कॉपर पाया जाता है।

जबकि सभी धातु अयस्क सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है और अत्यधिक खनन करने के कारण ये धातु अयस्क अतिशीघ्रता से खत्म होते जा रहे हैं। चांदी, सोना और प्लेटिनम जैसी बहुमूल्य धातुएँ भी हमारे बीच में पायी जाती हैं और जिसे मनुष्य एक बहुमूल्य खजाना मानता है।

प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की शुरूआत

जब से मानव जाति विकसित हुई है, वे जंगल और उनके उत्पादों पर पूरी तरह से निर्भर है। बीज, फल, और जंगली जानवर जो जंगल में पाये जाते हैं, जो आदिम मानव के भोजन का भाग होते हैं।

वे पत्तियां, शाखाएं और छाल का उपयोग कपड़ों की तरह करते थे और रोड़ी, पत्थर और मृत जानवरों की हड्डियों को हथियार की तरह उपयोग करते थे।

जंगलों की कटाई करके कृषि के लिये खेत बनाये गए। इन लोगों ने पर्याप्त मात्रा में भोजन उगाने का काम किया और अपने आश्रय बनाए और इससे जनसंख्या की काफी वृद्धि भी हुई। ज्यादा से ज्यादा लोगों को खाना मिला और सुविधाएँ भी उपलब्ध हुयीं। सभ्यता की प्रगति के साथ शहरी संस्कृति की वृद्धि के कारण जंगलों का एक बहुत बड़ा क्षेत्र समाप्त कर दिया गया। पेड़ों को लकड़ी, आश्रय बनाने, परिवहन के लिये गाड़ियाँ इत्यादि बनाने के लिये काट डाला गया और यह ईंधन का भी एक स्रोत था।

आग की खोज के साथ ही खाना पकाने के लिये ईंधन की अत्यधिक जरूरत होती थी। मानव ने ना केवल कोयले का खनन ईंधन के लिये बल्कि धातुओं के अयस्कों का प्रयोग पहिये तथा आभूषण इत्यादि बनाने के लिये करना आरम्भ किया। शुरूआत में यह क्षति उतनी गंभीर नहीं थी औद्योगिक क्रांति के बाद पिछले 400 सालों में जंगल जो मनुष्य का

से वायु अशुद्ध हो गयी है तथा जलस्रोत गाद से भर चुके हैं।

आदिम मानव और पर्यावरण के बीच एक सम्बन्ध था जिसमें वे एक डर के साथ रहते थे और उसका सम्मान भी करते थे। जैसे-जैसे मनुष्य और अधिक सभ्य होता चला गया और उसने नयी-नयी तकनीकें खोजनी शुरू कर दी, उसके चलते प्राकृतिक संसाधनों का खजाना जैसे मृदा, जंगल, खनिज, धातुएँ, हवा, पानी, पौधे और जानवर अत्यधिक मात्रा में दोहन का शिकार हुये।

दोहन के लिये मानव जनसंख्या में बढ़ोत्तरी उत्तरदायी है। पिछले दस सालों में पर्यावरणविद खतरे की खोजों के बारे में बताते आये हैं।

- पर्यावरणीय संसाधन सीमित हैं और अति दोहन के कारण शीघ्र ही समाप्त होने पर हैं।
- वायु, जल और मृदा का प्रदूषण मानव प्रक्रियाओं के कारण होता है जो मानव की उत्तरजीविता और कल्याण के लिये भी एक खतरे का संकेत है।

मानव और उसके पर्यावरण के बीच का संबंध विशेषतः औद्योगिक क्रांति की शुरूआत से ही बदल गया है। यह सामना करने तथा इसके परिणाम

पहले से ही आने शुरू हो गये हैं। पर्यावरण के अवक्रमण के बारे में आप अगले पाठ में विस्तार से जानेंगे।

बीमारियों से बचने के लिए क्या पर्यावरण संरक्षण जरूरी है?

मनुष्य अपनी सीमा को समझे पर्यावरण के विनाश में सबसे बड़ी भागीदारी मनुष्य की ही है। हम वन्य जीवों की सीमा क्षेत्र यानी जंगलों में जाते हैं, तब भी हम उन्हें मारते हैं। जब वे अपनी सीमा से बाहर आते हैं, तब भी हम उन्हें मारते हैं। हमें अपनी सीमा में रहना सीखना चाहिए। इस पृथ्वी पर हर जीव का उतना ही अधिकार है, जितना मनुष्य का। मुश्किल यह है कि मनुष्य ने पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग किया है। मनुष्य के लोभ, लालच और विलासिता के चलते प्रकृति का संतुलन बिगड़ा है। पर्यावरण के पिरामिड को हमने तहस-नहस कर दिया है। इसी का परिणाम है कि कोरोना ही नहीं, अपितु इसी प्रजाति की दूसरी बीमारियां भी फैलने का खतरा मंडरा रहा है। समय रहते यदि पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया, तो मानव का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण सभी का कर्तव्य

कोरोना जैसी महामारी से बचने के लिए पर्यावरण संरक्षण की सख्त जरूरत है। प्रदूषण का स्तर अत्यंत बढ़ा हुआ है। पेड़ कटते जा रहे हैं, जिससे वन क्षेत्र कम हो रहा है। नदियों का जल भी प्रदूषित हो गया है। प्रदूषण से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है। पेड़ बचेंगे, तो वातावरण में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ेगा। लोगों को स्वच्छ वायु मिलेगी। कोरोना की दूसरी लहर में अधिकांश मरीजों का ऑक्सीजन का स्तर कम हो गया था। ऑक्सीजन सिलेंडर लगाने पड़े। सरकार के साथ-साथ हर नागरिक भी पर्यावरण का संरक्षण करे। गमले में भी छोटे-छोटे पौधों को लगाएं। आस-पास जगह हो तो पेड़ लगाएं। सामूहिक

प्रयास से पर्यावरण को संरक्षण देकर वातावरण को प्रदूषण मुक्त करने का संकल्प करें।

स्वच्छ पर्यावरण जीवन के लिए संजीवनी

देश का पर्यावरण अच्छा रहना सभी नागरिकों के लिए अति आवश्यक है। आज हमारे पड़ोसी देश भूटान को देख लीजिए। वहां पर 60 प्रतिशत वन है। वहां कोरोना का खास असर नहीं हुआ। हमें भी वन और वन्य जीवों को बचाना चाहिए, ताकि बीमारियों से बचे रहें।

कोरोना और पर्यावरण का नाम आते ही सबसे पहले जेहन में ऑक्सीजन का ख्याल आता है। कोरोना एक ऐसी बीमारी है, जिसमें बीमार व्यक्ति के फेफड़ों में संक्रमण हो जाता है। मरीज को श्वास लेने में कठिनाई होती है। ऐसे में कोरोना से पीड़ित व्यक्ति को ऑक्सीजन की बहुत जरूरत होती है।

जितनी मात्रा में ऑक्सीजन हमें प्रकृति द्वारा प्राप्त होती है, उतनी ऑक्सीजन का उत्पादन कृत्रिम रूप से नहीं किया जा सकता है। हमें प्राकृतिक रूप से ऑक्सीजन पेड़ पौधों से ही प्राप्त होती है।

पेड़-पौधों को बचाने के लिए पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है। अत: हम कह सकते हैं कि कोरोना जैसी बीमारियों से बचने के लिए पर्यावरण संरक्षण बहुत जरूरी है ।

भारत में पर्यावरण की समस्या

भारत में पर्यावरण की कई समस्या है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, कचरा, और प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषण भारत के लिए चुनौतियाँ हैं। पर्यावरण की समस्या की परिस्थिति 1947 से 1995 तक बहुत ही खराब थी।

1995 से 2010 के बीच विश्व बैंक के विशेषज्ञों के अध्ययन के अनुसार, अपने पर्यावरण के मुद्दों को संबोधित करने और अपने पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने में भारत दुनिया में सबसे तेजी से प्रगति कर रहा है। फिर भी, भारत विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के स्तर तक आने में इसी तरह के पर्यावरण की गुणवत्ता तक पहुँचने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना है। भारत के लिए एक बड़ी चुनौती और अवसर है। पर्यावरण की समस्या का, बीमारी, स्वास्थ्य के मुद्दों और भारत के लिए लंबे समय तक आजीविका पर प्रभाव का मुख्य कारण हैं।

कारण

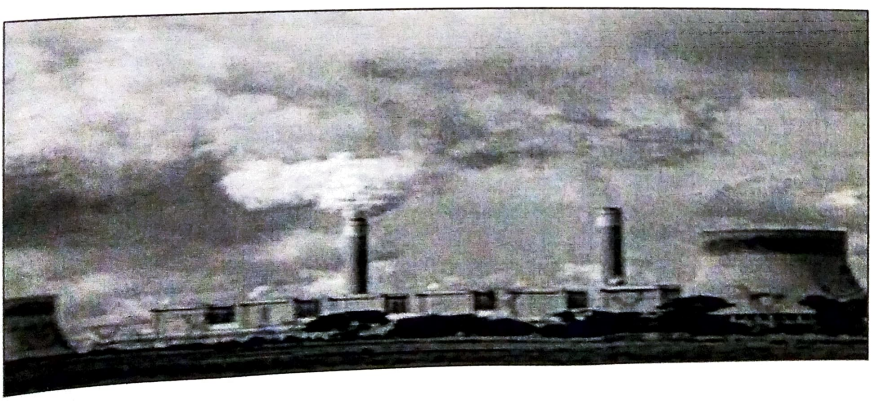

कुछ पर्यावरण के मुद्दों के बारे में कारण के रूप में आर्थिक विकास को उद्धृत किया है।दूसरे, आर्थिक विकास में भारत के पर्यावरण प्रबंधन में सुधार लाने और देश के प्रदूषण को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है विश्वास करते हैं।बढ़ती जनसंख्या भारत के पर्यावरण क्षरण का प्राथमिक कारण भी है ऐसा सुझाव दिया गया है।व्यवस्थित अध्ययन में इस सिद्धांत को चुनौती दी गई है

तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या व आर्थिक विकास और शहरीकरण व औद्योगीकरण में अनियंत्रित वृद्धि, बड़े पैमाने पर कृषि का विस्तार तथा तीव्रीकरण, तथा जंगलों का नष्ट होना इत्यादि भारत में पर्यावरण संबंधी समस्याओं के प्रमुख कारण हैं।

प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में वन और कृषि-भूमिक्षरण, संसाधन रिक्तीकरण (पानी, खनिज, वन, रेत, पत्थर आदि), पर्यावरण क्षरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता में कमी, पारिस्थितिकी प्रणालियों में लचीलेपन की कमी, गरीबों के लिए आजीविका सुरक्षा शामिल हैं।

यह अनुमान है कि देश की जनसंख्या वर्ष 2018 तक 1.26 अरब तक बढ़ जाएगी. अनुमानित जनसंख्या का संकेत है कि 2050 तक भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश होगा और चीन का स्थान दूसरा होगा।

दुनिया के कुल क्षेत्रफल का 2.4% परन्तु विश्व की जनसंख्या का 17.5% धारण कर भारत का अपने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव काफी बढ़ गया है। कई क्षेत्रों पर पानी की कमी, मिट्टी का कटाव और कमी, वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण के कारण बुरा असर पड़ता है।

प्रमुख समस्यायें

भारत की पर्यावरणीय समस्याओं में विभिन्न प्राकृतिक खतरे, विशेष रूप से चक्रवात और वार्षिक मानसून बाढ़, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती हुई व्यक्तिगत खपत, औद्योगीकरण, ढांचागत विकास, घटिया कृषि पद्धतियां और संसाधनों का असमान वितरण हैं और इनके कारण भारत के प्राकृतिक वातावरण में अत्यधिक मानवीय परिवर्तन हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार खेती योग्य भूमि का 60% भूमि कटाव, जलभराव और लवणता से ग्रस्त है।

यह भी अनुमान है कि मिट्टी की ऊपरी परत में से प्रतिवर्ष 4.7 से 12 अरब टन मिट्टी कटाव के कारण खो रही है। 1947 से 2002 के बीच, पानी की औसत वार्षिक उपलब्धता प्रति व्यक्ति 70% कम होकर 1822 घन मीटर

रह गयी है तथा भूगर्भ जल का अत्यधिक दोहन हरियाणा, पंजाब व उत्तर प्रदेश में एक समस्या का रूप ले चुका है।

भारत में वन क्षेत्र इसके भौगोलिक क्षेत्र का 18.34% (637,000 वर्ग किमी) है। देश भर के वनों के लगभग आधे मध्य प्रदेश (20.7%) और पूर्वोत्तर के सात प्रदेशों (25.7%) में पाए जाते हैं; इनमें से पूर्वोत्तर राज्यों के वन तेजी से नष्ट हो रहे हैं। वनों की कटाई ईंधन के लिए लकड़ी और कृषि भूमि के विस्तार के लिए हो रही है। यह प्रचलन औद्योगिक और मोटर वाहन प्रदूषण के साथ मिल कर वातावरण का तापमान बढ़ा देता है जिसकी वजह से वर्षण का स्वरुप बदल जाता है और अकाल की आवृत्ति बढ़ जाती है।

पार्वती स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान का अनुमान है कि तापमान में 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि सालाना गेहूं की पैदावार में 15-20% की कमी कर देगी. एक ऐसे राष्ट्र के लिए, जिसकी आबादी का बहुत बड़ा भाग मूलभूत स्रोतों की उत्पादकता पर निर्भर रहता हो और जिसका आर्थिक विकास बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास पर निर्भर हो, ये बहुत बड़ी समस्याएं हैं।

पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों में हो रहे नागरिक संघर्ष में प्राकृतिक संसाधनों के मुद्दे शामिल हैं - सबसे विशेष रूप से वन और कृषि योग्य भूमि. जंगल और जमीन की कृषि गिरावट, संसाधनों की कमी (पानी, खनिज, वन, रेत, पत्थर आदि),पर्यावरण क्षरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता के नुकसान, पारिस्थितिकी प्रणालियों में लचीलेपन की कमी है, गरीबों के लिए आजीविका सुरक्षा है। भारत में प्रदूषण का प्रमुख स्रोत ऐसी ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत के

रूप में पशुओं से सूखे कचरे के रूप में फ्युलवुड और बायोमास का बड़े पैमाने पर जलना, संगठित कचरा और कचरे को हटाने सेवाओं की एसीके, मलजल उपचार के संचालन की कमी, बाढ़ नियंत्रण और मानसून पानी की निकासी प्रणाली, नदियों में उपभोक्ता कचरे के मोड़, प्रमुख नदियों के पास दाह संस्कार प्रथाओं की कमी है,

सरकार अत्यधिक पुराना सार्वजनिक परिवहन प्रदूषण की सुरक्षा अनिवार्य है, और जारी रखा 1950-1980 के बीच बनाया सरकार के स्वामित्व वाले, उच्च उत्सर्जन पौधों की भारत सरकार द्वारा आपरेशन है। वायु प्रदूषण, गरीब कचरे का प्रबंधन, बढ़ रही पानी की कमी, गिरते भूजल टेबल, जल प्रदूषण, संरक्षण और वनों की गुणवत्ता, जैव विविधता के नुकसान, और भूमि / मिट्टी का क्षरण प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में से कुछ भारत की प्रमुख समस्या है। भारत की जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के मुद्दों और अपने संसाधनों के लिए दबाव समस्या बढ़ाते है।